

बाल विज्ञान पत्रिका, अप्रैल 2023

चकमक



मूल्य ₹50

हल्लम हल्लम हौंदा
हाथी चल्लम चल्लम
हम बैठे हाथी पर
हाथी चल्लम चल्लम

लम्बी लम्बी सूँड
फटाफट फटूर फटूर
लम्बे लम्बे दाँत
खटाखट खटूर खटूर

भारी भारी मूँड
मटकता झम्मम झम्मम
हल्लम हल्लम हौंदा
हाथी चल्लम चल्लम

पर्वत जैसी देह थुलथुली
थल्लल थल्लल
हालर हालर देह हिले
जब हाथी चल्लल

खम्भे जैसे पाँव
धपाधप पड़ते धम्मम
हल्लम हल्लम हौंदा
हाथी चल्लम चल्लम

हाथी जैसी नहीं सवारी
अगगड़ बगगड़
पीलवान पुच्छन बैठा है
बाँधे पगगड़

बैठे बच्चे बीस सभी
हम डगगम डगगम
हल्लम हल्लम हौंदा
हाथी चल्लम चल्लम

दिन भर घूमेंगे हाथी पर
हल्लर हल्लर
हाथी दादा जरा नाच दो
थल्लर थल्लर

अरे नहीं हम गिर जाएँगे
घम्मम घम्मम
हल्लम हल्लम हौंदा
हाथी चल्लम चल्लम



हाथी चल्लम चल्लम

श्रीप्रसाद

चित्र: कनक शशि



मार्च अंक की 'कविता डायरी -1' में हमने कवि श्रीप्रसाद जी की इस कविता का जिक्र किया था। पूरी कविता को सामने रखे बिना बात कुछ अधूरी लगती है, तो इस अंक में प्रस्तुत है ये कविता।

अंक 439 • अप्रैल 2023

चकमक

इस बार

हाथी चल्लम चल्लम - श्रीप्रसाद	2
कविता डायरी - ऊँघ रही....- सुशील शुक्ल	4
एक हिम तेन्दुए से	
हमारी मुठभेड़ - शेराब लोबज़ंग	7
गणित है मज़ेदार - रोचक संख्याएँ भाग ।	
- आलोका कान्हेरे	13
चित्रपहेली	18
कला के आयाम - शेफाली जैन	20
रेत के कीड़े - विमल चित्रा	25
अमन की कुछ बातें -तुमने ऐसा किया...	
- अमन मदान	26
पिक्चर पोस्टकार्ड की ज़िन्दगी...	
- शिवकुमार गांधी	28
क्यों-क्यों	30
माथापच्ची	34
मेरा पन्ना	36
तुम भी जानो	43
भूलभुलैया	44



Our Encounter with a Snow Leopard (English), written by Sherab Lobzang, illustrated by Tanushree Roy Paul, published by Nature Conservation Foundation (© Nature Conservation Foundation, 2021) under a CC BY 4.0 license on StoryWeaver. Read, create and translate stories for free on www.storyweaver.org.in

आवरण: तनुश्री रॉय पॉल

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

वितरण

ज्ञानक राम साहू

डिज़ाइन

कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग

इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।



कविता डायरी-2

ऊँघ रही बत्तियाँ, पड़े हैं जहाँ-तहाँ अँधियारे...

सुशील शुक्ल

चित्र: कनक शशि

कहावतें और मुहावरे अक्सर अचरज में डाले रहते हैं। शब्द अगर मधुमक्खियाँ हैं तो मुहावरे और कहावतें शहद के छत्ते हैं। तो फिर फूल क्या हैं? वे भाषा में कोई ऐसी चीज़ हैं जिनसे कविता का एक खास रिश्ता है। ‘घोड़े बेचकर सोना’ एक मुहावरा है। इसकी भी कोई कहानी होगी। घोड़े किसी ज़माने में हमारी दुनिया के अहम जानवर हुआ करते थे। एक ज़माने में वे ज़माने की धूल उड़ाते चलते थे। आज उनकी ही धूल उड़ी हुई है। घोड़ा एक बेहद फुर्तीला जानवर है। उसके खड़े होने में भी एक चाल है। जैसे, तेज़ हवाएँ बड़े-बड़े पत्थरों को तराश देती हैं। घोड़े हवाओं से ही तो बात करते हैं। वे भी हवाओं के तराशे लगते हैं। मन को बेलगाम घोड़ा कहा जाता रहा है। शायद इसीलिए बेफिकर नींद के लिए घोड़े बेचकर सोने की बात कही गई है। इस मुहावरे में घोड़ा ही बेचा जा सकता था। चीता भी बड़ा फुर्तीला जानवर है। मगर चीते ने इन्सान को बेचने का हक नहीं दिया। वह पालतू नहीं हुआ। कि किसी की नींद के लिए बिक जाए। मेरे पास एक घोड़ा गुलज़ार साब का है। जो घमण्डी है और सब्जी मण्डी पहुँच जाता है। जहाँ वह बरफ से ठण्ड खा जाता है। और एक घोड़ा चित्रकार हुसेन साब का है। उनके घोड़े भी ज़माने की धूल उड़ाते चलते थे। एक बार कुछ लोगों की आँखों में वह धूल पड़ गई। हुसेन साब को अपने घोड़े लेकर दूसरे देश जाना पड़ा।...

कवि अरुण कमल कहते हैं कि नींद मनुष्य का मनुष्य पर विश्वास है। एक बार मैंने ताई को बम्बई के बारे में कहते सुना कि वहाँ ऐसे लोग भी हैं जो सोते में किसी को बेच देते हैं। हर

व्यक्ति को नींद की ज़रूरत है। जो सबसे ज़्यादा मेहनत करता है उसे सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। सोते को नुकसान पहुँचाने के लिए भी उसका सोया होना ज़रूरी है। हर व्यक्ति को नींद की ज़रूरत है, यह मानी हुई बात है। यह बात न टूटे। हर इन्सान दूसरे इन्सान की नींद को बचाए रखे। इस बात का मनुष्य का मनुष्य पर यकीन। निरंकारदेव सेवक की एक कविता

कहीं एक बुढ़िया थी, जिसका नाम नहीं था कुछ भी। वह दिन भर खाली रहती थी काम नहीं था कुछ भी। काम न होने से उसको आराम नहीं था कुछ भी। दोपहरी दिन रात सबरे शाम नहीं था कुछ भी।

भी नींद उड़ा देनेवाली कविता है। नींद के सिलसिले में मुझे दो रचनाएँ कौंध रही हैं। इंदरीस सिद्दकी की कहानी में एक लड़की है जो दिन-रात काम में जुटी रहती है। क्रिसमस आने वाला है। मालिक बहुत दया करके उससे पूछता है कि क्रिसमस पर एक तोहफा माँग लो। वह बेहद थकी है। “एक दिन की छुट्टी दे दीजिए। मैं सोना चाहती हूँ।” वह बोलती है तो उसे खुद पता चलता है कि उसने यह क्या बोल दिया...

श्वेता नाम्बियार की एक कविता ‘क्या सबकी रातें आराम को हैं?’ में एक बच्चा है। उसके घर रात में कभी कोई ट्रक रुकता है, कभी कोई कार। बच्चा एक कमरे में अकेला है। वह रात की तमाम आवाज़ें सुनता है। दूसरे कमरे में सोने की कोशिश में है। नींद नहीं आती, सवाल आते हैं। एक सवाल आता है, “क्या सबकी रातें आराम को हैं?”...

एक कविता या कहिए लोरी है
‘माँ का गीत’ (नवीन सागर)। इस
कविता में बच्चे को माँ का साथ
हासिल है। बचपन में मेरे पिता
कभी-कभी मुझे लोरी सुनाते थे।
उनकी आवाज़ भारी थी। लोरी तो
क्या वे सूर के पद सुनाते थे। मैं उन
दिनों माँ के पास सोता था। उन्हें
अन्दाज़ था कि उनकी लोरी मीठी
नहीं है। और माँ को शायद वह
खास पसन्द न आए। इसलिए वे
गाते हुए अपने एक हाथ से माँ के
सिर को सहलाते रहते थे। एक हाथ
से मेरे सिर को। मैंने माँ और पिता
की झड़पें भी देखी हैं। मगर वे मुझे
दुखी नहीं करती थीं। क्योंकि मैंने
माँ और पिता को प्रेम में भी देखा
था। कि उनके झगड़े के वक्त मुझे
उनका प्रेम याद आता था। वह न
याद आता तो फिर मैं क्या याद
करके उसे सहता?

लोरी गाने वाला किसी को नींद
के एकदम किनारे छोड़कर आता
है। कि कोई नींद का रास्ता न
भटके। नींद में जाने की आखिरी
याद साथ की याद बनाता है। सुबह
जागने की पहली याद साथ की
याद बनाता है। “मनुष्य का
मनुष्य पर साथ का
यकीना” चलिए, माँ
का गीत सुनिए

सो जा ओ सो जा रे
उधर नींद न आए अगर तो
इधर गोद में आ रे...

पंछी लौट बसेरा सोए
आसमान में तारे
सोए पेड़ पत्तियाँ सोई
फूल सो गए सारे
ऊँघ रहीं बत्तियाँ
पड़े हैं जहाँ-तहाँ अँधियारे
नींद कहीं से बुला रही है
आ रे आ रे आ रे आ रे!



ऊँघने से अज्ञेय की एक कविता का टुकड़ा
याद आ रहा है।

शरद चाँदनी बरसी
अँजुरी भरकर पी लो
ऊँघ रहे हैं तारे
सिहरी सरसी

(सरसी छोटे-से तालाब या पोखर को कहते हैं।)

सरकारी बसों में तीन की सीट पर पाँच लोग बैठते थे। मैं बच्चा था तो मैंने ऊँघते लोगों को झेला है। मुझे नज़र रखनी पड़ती थी कि कहीं ऊँघते व्यक्ति का सर मेरे सर से न टकरा जाए। ऊँघते व्यक्ति के सिर की मटक देखने लायक होती है। मुझे उसे देखने में मज़ा आने लगता था। बस की अलग-अलग रफ्तार उसे दिलकश बना देती थी। ऊँघ रहे इन्सान का सिर किसी पैटर्न में नहीं झूलता। हल्की-फुल्की हवा में दिए की लौ की मटक भी उतनी शानदार होती है। लगता है कि लौ से आसपास की हवाएँ वैसे ही पेश आती होंगी जैसे मैं ऊँघ रहे व्यक्ति से पेश आता था। यह कविता मेरे उस घर की याद को भी गहराती है कि कैसे एक घर एक घर में ही नहीं सिमटा है। वह अपने आसपास में खुला है। कि उसमें पंछियों की, तारों की, पत्तियों की, पेड़ों की... सबके सोने की बात है। उनकी परवाह है। लोगों के साथ-साथ सब कुछ सो रहा है। जागने को कोई साथ नहीं बचा है। सोए पेड़ कहकर कविता आगे नहीं बढ़ जाती है। वह यह कहकर कि पत्तियाँ भी सो गई हैं, पेड़ के सोने को गहरा देती है। जैसे, पेड़ की नींद पत्तियों तक में उतर आई है।

अक्सर कविता का आँगन कशिश पैदा करता है। कि वह अपने दामन में कौन-से दृश्य पिरोए हुए है? वह किनकी परवाह करती है, किन को याद करती है? एक कविता कौन-सी ध्वनियाँ जुटाती है? कि एक कविता की पसलियाँ कौन-से शब्द और वाक्यों से बनी हैं?

(शाम ही से बुझा-सा रहता है, दिल हुआ है चराग
मुफलिस का। मीर के एक शेर का हिस्सा)

ऊँघ रही बत्ती कुछ देर में वहीं सो जाएगी जहाँ कि कई और अँधेरे पड़े हैं। कवि राजेश जोशी की बच्चों के लिए लिखी एक बेमिसाल कविता का अंश है – कौआ इतना काला है कि उलट गया उजाला है।... इस कविता ने सिर्फ ‘कितना काला है’ के लिए भाषा में एक नई बात ही नहीं पैदा की है। नया कहना ही नहीं बनाया है... उसमें एक इशारा और भी है कि उजाले उजाले भरे ही नहीं हैं। और अँधेरा अँधेरा ही नहीं है। (जैसे कि कहीं फज़ल तबिश कहते हैं कि ज़र्र ज़र्र उधेड़कर देखो, रोशनी किस जगह से काली है।)

बहुत कम कवि हुए हैं जो बच्चों से इस सलीके से बात करें कि

ऊँघ रहीं बतियाँ, पड़े हैं जहाँ-तहाँ अँधियारे...

नवीन सागर की यह कविता ‘माँ का गीत’ उस घर या इलाके की याद दिलाती है जहाँ कोई कहीं लोटा है, कोई कहीं। नींद की तैयारी करके नहीं सोए। नींद को जैसे मिले उसी हाल में सो गए। रेलवे स्टेशनों में ऐसे दृश्य मैं थोड़ी देर थमकर देखता रहता हूँ। सब बेतरतीब सो रहे हैं। आसपास सामान पड़ा है। नींद के यकीन के साथ। लगता है कि सोने वाले सब एक ही घर के हैं। वे नींद के कुनबे के लोग हैं। ट्रेनों के आने-जाने की सूचनाएँ उनकी लोरियाँ बन जाती हैं।

एक बुजुर्ग अकेले रहते हैं। वे टीवी को चालू छोड़ सोते हैं। कि एक आवाज़ का ही पर साथ रहे। साथ का यकीन। कविता की बात मीर के बिना पूरी नहीं होती... ...सिरहाने मीर के आहिस्ता बोलो, अभी टुक रोते-रोते सो गया है। यह जो टुक है न...यही वह फूल है जिससे कविता का एक खास रिश्ता है। न, न टुक भाषा के स्टेशन पर अर्थों को ढोनेवाला कुली नहीं है।



एक हिम तेन्दुए से हमारी मुठभेड़

शेराब लोबज़ैंग

चित्र: तनुश्री रॉय पॉल

अनुवाद: विनता विश्वनाथन



मैं कुमडोक में बड़ी हुई। कुमडोक लद्दाख के अन्दरूनी इलाके में बसा 17 घरोंवाला एक कस्बा है। ऊँचे पहाड़ों और नीले आसमानों वाली एक जगह। जब मैं छोटी थी तब गाँव के सारे परिवार मवेशी पालते थे। हर परिवार के पास बकरियाँ, भेड़, याक और गायें हुआ करती थीं। हम सब मवेशी चराते थे, बच्चे भी। हमें यह ध्यान रखना होता था कि हम हर पल गाँव के आसपास के चारागाहों में घूमते अपने मवेशियों के साथ ही रहें। मुझे आज भी वो समय याद है जब मैं पहली बार कस्बे के मवेशी चराने गई। वो मेरे जीवन का सबसे रोमांचक और डरावना दिन था।

मेरे अबा और अमा दोनों घर के कामों में मशरूफ थे। तो उन्होंने मुझे और मेरे आठ साल के भाई नुर्बू को झुण्ड के साथ भेज दिया। मैं अपने भाई से छह साल बड़ी थी। पूरा दिन जानवरों की देख-रेख, चाय पीने, सत्तू (जौ का आटा) खाने और गप मारने में बीता। हमारे ज़िम्मे लगभग 50 जानवर थे। सब कुछ ठीक चल रहा था और हम निश्चिंत थे। “ये काम तो आसान है,” मैंने मन ही मन सोचा।

जब हम जानवरों के झुण्ड के साथ पहाड़ से उतर रहे थे तभी नुर्बू के मुँह से चीख निकली।

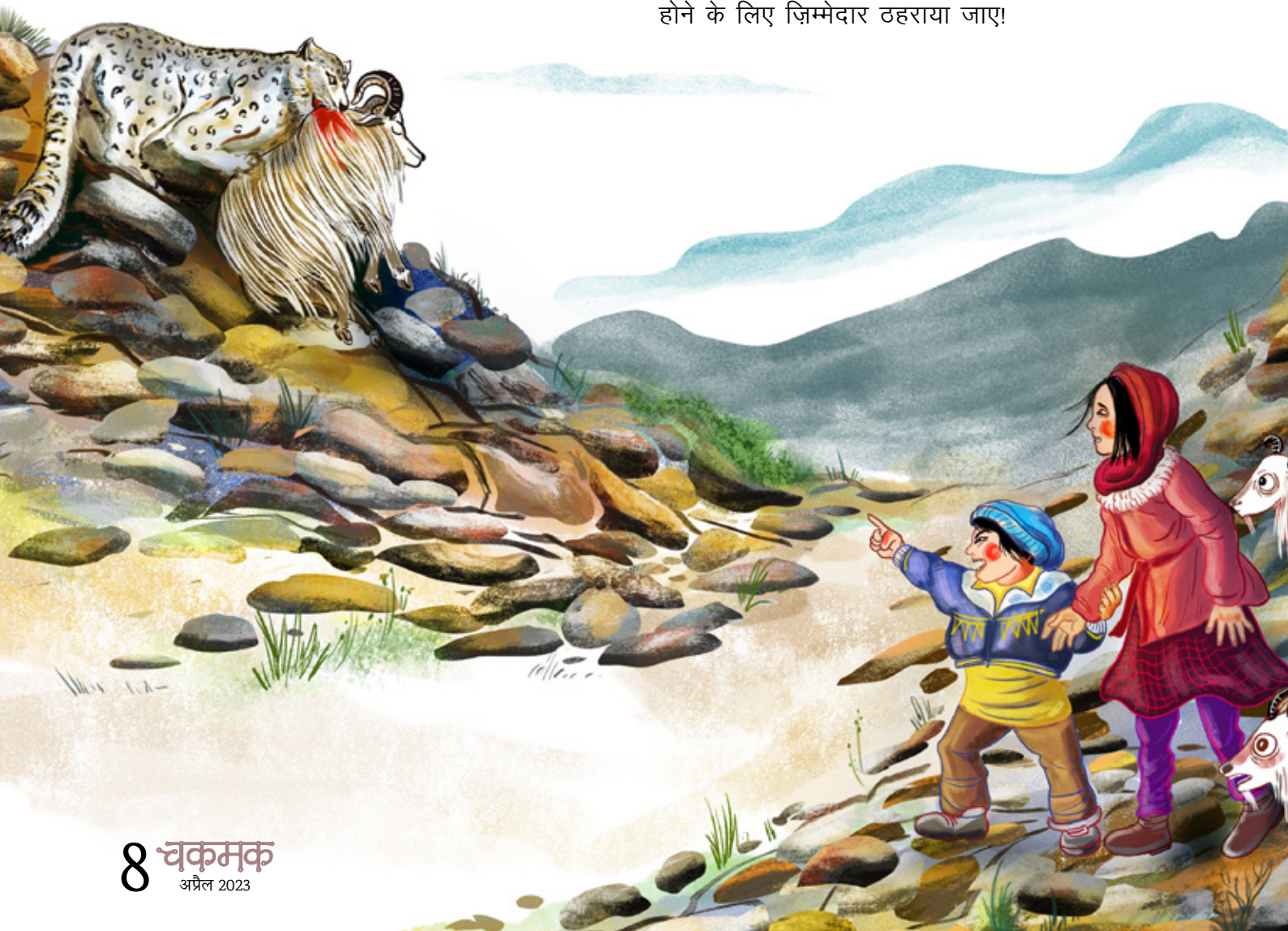
और उसने एक बड़े, फरी, स्लेटी जानवर की तरफ इशारा किया जिसने एक बकरी को गले से पकड़ लिया था। हमारे हाथ-पैर जम गए। कुछ मिनट बेहद तनाव में गुज़रे। मैं सिर्फ उसे घूरती रही। आखिरकार मैंने एक लम्बी साँस ली और अपने आप से कहा कि मैं उम्र में अपने भाई से बड़ी हूँ और मुझे ही कुछ करना होगा। मैंने नुबू का हाथ पकड़ा और फुसफुसाया कि डरो मत।

हम दोनों हिम तेन्दुए की तरफ बहुत-ही धीमे-धीमे चलने लगे। अबा-अमा ने हमें सिखाया था कि जंगली जानवर से सामना हो तो क्या करना चाहिए। पहले हम ज़ोर-से चिल्लाए। शोर से जानवर चौंक जाते हैं।

अपनी सुरक्षा के लिए नुबू और मैंने ज़मीन से ढीले पत्थर उठाए और डराने के लिए हिम तेन्दुए की तरफ फेंकें। मैंने एक लकड़ी ली और ज़मीन को पीटते हुए हल्ला मचाने लगी।

शोर से चौंककर हिम तेन्दुए ने बकरी गिरा दी। वो हम दोनों पर गुराया। पर हम ने साथ मिलकर इतना हल्ला मचाया कि हिम तेन्दुए के लिए शान्ति से बकरी खाना नामुमकिन हो गया! तो वो वहाँ से हट गया और ऊपर पहाड़ पर चढ़कर हमें देखने लगा।

हमें एक मौका मिल गया था ये देखने का कि बकरी अभी ज़िन्दा है या नहीं। हम बकरी की ओर भागे। वो मर चुकी थी। हम चिन्तित थे। हम गाँव में किसी से भी यह कहना नहीं चाहते थे कि हमारी वादी में एक हिम तेन्दुआ है। बतौर चरवाहा वो हमारा पहला दिन था और हम नहीं चाहते थे कि हमें एक बकरी के गुम होने के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जाए!





“कहीं वो दूध देनेवाली बकरी ना हो,” मैंने कहा। नुर्बु ने सिर हिलाया। हम नहीं चाहते थे कि किसी को भी पता चले कि एक बकरी कम है। अगर वो बकरी थी तो उसके मालिक को शायद पता चल जाता। अगर वो बकरा होता तो हमें ज़्यादा चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि तब शायद उसके मालिक का इस पर ध्यान नहीं जाता कि झुण्ड में एक जानवर कम है। मैंने बकरी से दूध दुहने की कोशिश की तो कुछ नहीं निकला। मैंने राहत की साँस ली। छोटी-सी रहमत ही सही।

नुर्बु और मैं लाश को उठाकर वापिस गाँव ले जाना चाहते थे। लेकिन हम दोनों छोटे थे और हम में इतनी ताकत नहीं थी कि 20-30 किलो के जानवर को उठा ले जाएँ। हमने लाश को छिपाने

का विचार किया लेकिन हिम तेन्दुआ हम पर नज़र रखे हुए था और उसे छिपाने वाली जगह का पता चल जाता।

दो घण्टों तक हम दोनों बकरी की लाश के साथ खड़े रहे, चिन्तित। अचानक नुर्बु ने नज़र घुमाई। “अछे, हमारा झुण्ड!” वो चिल्लाया। बकरी की चिन्ता में हमें एहसास ही नहीं हुआ कि हम झुण्ड के बाकी जानवरों को तो भूल ही गए थे। वे कहीं दिख नहीं रहे थे! मेरे पेट में डर के मारे गुड़-गुड़ होने लगी।

तथ्य: जब बकरी के बच्चे होते हैं तो उसके थन में दूध होता है। अगर उस बकरी का दूध पीनेवाला कोई मेमना होता तो मालिक को पता चल जाता कि वो बकरी गुम है क्योंकि मेमना दूध के लिए मिमियाता!





हमने बकरी की लाश ठीक वहीं रहने दीं, जहाँ उसे मारा गया था। और बाकी झुण्ड का पता लगाने हम जल्दी से पहाड़ से नीचे उतरे। वे हमें कुछ 3 किलोमीटर नीचे ढलान पर एक-दूसरे से सटे मिले। वे हिम तेन्दुए से इतना डरे हुए थे कि हिल भी नहीं पा रहे थे।

मैंने अपने भाई की तरफ देखा और उससे कहा कि जो हुआ उसके बारे में वो हमारे अबा-अमा या गाँववालों को कुछ न बताए। हम दोनों को डर था कि हमें सज़ा मिलेगी क्योंकि हमारे सामने ही हिम तेन्दुए ने गाँव की एक बकरी को मार डाला था। तो हमने तय किया कि ये राज हम दोनों के बीच ही रहेगा।

हमने बकरी की लाश ठीक वहीं रहने दीं, जहाँ उसे मारा गया था। और बाकी झुण्ड का पता लगाने हम जल्दी से पहाड़ से नीचे उतरे। वे हमें कुछ 3 किलोमीटर नीचे ढलान पर एक-दूसरे से सटे मिले। वे हिम तेन्दुए से इतना डरे हुए थे कि हिल भी नहीं पा रहे थे। उनकी ओर रेत फेंककर और अपनी लकड़ियों से शोर मचाकर हमने किसी तरह मना-फुसलाकर उन्हें वहाँ से रवाना किया।

घर के रास्ते पर हमें कुछ गाँववाले मिले जो हमें ढूँढते हुए आ रहे थे। वे बकरियों को चराने में हमारी मदद करने आ रहे थे। उन्होंने हमसे पूछा कि हमने उस दिन भेड़िया या हिम तेन्दुआ तो नहीं देखा। मेरे भाई और मैंने सिर हिलाया और एक-दूसरे की तरफ देखा।

शाम को हम घर देर से पहुँचे। माँ ने हमें चाय और रोटी दी। हमारे भीतर भावनाएँ उफन रही थीं लेकिन हमने तय किया कि यही जताना ठीक होगा कि दिन बिना किसी समस्या के गुज़रा।

जब हम चाय पी रहे थे तो अमा ने कहा कि वो सारा दिन हमारे बारे में ही सोच रही थीं। वे काफी चिन्तित रही थीं। हमने उनको बताया नहीं कि क्या हुआ। अपनी माँ को कोई कैसे बताए कि हमने एक

हिम तेन्दुए का सामना किया। हम नहीं चाहते थे हमारी माँ परेशान हों। हम मुस्कराए और बहादुर बनकर हमने कहा कि सब कुछ ठीक था।

कहीं न कहीं तो हमें पता था कि जो हम कर रहे थे वो गलत था। परम्परानुसार हर चरवाहे को बाकी चरवाहों को सचेत करना चाहिए यदि वादी में कोई मांसभक्षी जानवर हो, जो झुण्ड के लिए खतरा बन रहा हो। इससे अगले दिन चरवाहे बेहतर तैयारी के साथ जाते हैं और झुण्ड के साथ दो की बजाय चार चरवाहे जाते हैं। लेकिन हमने तो इस खबर को राज़ बनाकर अपने तक ही रखा था। हम गिल्ट से भरे जा रहे थे।

अगले दिन, मैंने देखा कि चूँकि हमने गाँववालों को हिम तेन्दुए के बारे में सतर्क नहीं किया था, एक ही नर चरवाहा मैदान गया। हम बहुत चिन्तित थे कि क्या होगा। क्या हमारा दोस्त खतरे में होगा? किसी को न बताकर क्या हमने उसकी या बकरियों की जान खतरे में डाल दी थी?

अपनी नज़रें पहाड़ों पर गड़ाए हम पूरा दिन इन्तज़ार करते रहे। शाम तक हमारा दोस्त वापिस आ गया। गनीमत थी कि किसी जानवर को नुकसान नहीं पहुँचा था।



कोई दो महीने बाद मैंने अपनी माँ को यह सच बताने का साहस बटोर ही लिया कि उस दिन क्या हुआ था। और कैसे हमने हिम तेन्दुए का सामना किया था। “हमने बकरी बचाने की पूरी कोशिश की थी,” कहकर मैं रोने लगी।



वो अचम्भित थीं। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि हम इतने साहसी थे कि महज़ लकड़ी और कुछ पत्थरों से हमने तेन्दुए को भगा दिया। हम दोनों को उन्होंने गले लगाया और अगली बार ज़्यादा ख्याल रखने को कहा।

उन्होंने हमें समझाया कि गाँववालों को ऐसे किस्सों के बारे में बताना क्यों ज़रूरी था। और ऐसा ना करने के लिए उन्होंने हमें डाँटा भी।

काफी समय बाद जब मैं संरक्षण (conservation) के क्षेत्र में काम करने लगी तब मुझे समझ में आया कि जब हिम तेन्दुआ किसी जानवर को मारता है तो उस लाश को बिना कुछ किए वहीं पर रहने देना ही सबसे उचित होता है। इस तरह तेन्दुआ उसे खा सकता है। और इससे यह बात सुनिश्चित



हो जाती है कि हिम तेन्दुआ अगले दिन और जानवरों को नहीं मारेगा। मेरे भाई और मैंने ऐसा ही किया था लेकिन सिर्फ इसलिए कि हम जानवर की लाश अपने साथ लाने के लिए उसे उठा नहीं पाए थे।

आजकल संरक्षण की कोशिशों के चलते लोग जानवरों की लाश को बिना छुए ही छोड़ देते हैं और तेन्दुआ उसे खा पाता है। ये तरीका तेन्दुए, गाँववालों और हमारे लिए भी कारगर रहा था।



Our Encounter with a Snow Leopard (English), written by Sherab Lobzang, illustrated by Tanushree Roy Paul, published by Nature Conservation Foundation (© Nature Conservation Foundation, 2021) under a CC BY 4.0 license on StoryWeaver. Read, create and translate stories for free on www.storyweaver.org.in



रोचक संख्याएँ

भाग 1

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

चुप हो जा मेरे प्यारे बेटे
है बात ये कुछ अनूठी,
तेरी बहन को मिले मम्मी-पापा
पर तुझे मिली बस मम्मी!

गणित
मजेदार

दिलचस्प बात यह है कि ऐसा जरूरी नहीं है कि सभी मधुमक्खियों के जैविक माता और जैविक पिता (biological parent) दोनों हों।



सभी मादा मधुमक्खियाँ तब पैदा होती हैं जब रानी मधुमक्खी नर मधुमक्खी के साथ प्रजनन (mating) करती है। पर नर मधुमक्खियाँ रानी के अनिषेचित (unfertilised) अण्डों से पैदा होती हैं। इसीलिए नर मधुमक्खियों की केवल माँ होती हैं। उनके कोई जैविक पिता नहीं होते हैं। जबकि मादा मधुमक्खियों की जैविक माँ और जैविक पिता दोनों होते हैं।

आओ, हम नर मधुमक्खी के वंश वृक्ष (family tree) को देखते हैं।



इस नर मधुमक्खी के पूर्वजों की संख्याएँ पता करने की कोशिश करो।

चलो, अब हम मादा मधुमक्खी के वंश वृक्ष को देखते हैं।



मादा मधुमक्खी के पूर्वजों की संख्याएँ पता करने की भी कोशिश करो।

दोनों वंश वृक्षों के आधार पर क्या तुम इस तालिका को भर सकते हो और आगे बढ़ा सकते हो?

संख्या	माँ पिता	नाना नानी	परनाना नानी	पर-परनाना पर-परनानी	पर-पर- परनाना पर-पर- परनानी	पर-पर-पर-पर- परनाना पर-पर-पर-पर- परनानी	पर-पर-पर-पर- परनाना पर-पर-परनानी
नर मधुमक्खी 1	1	2	3	5	8	13	?
मादा मधुमक्खी 1							

यदि तुम वंशवृक्ष को सही ढंग से आगे बढ़ाओगे तो देखोगे कि नर मधुमक्खी व उसके पूर्वजों की संख्या का क्रम कुछ ऐसा होगा 1, 1, 2, 3, 5, 8, 13, ... अब तुम पता करो कि मादा मधुमक्खी व उसके पूर्वजों की संख्या का क्रम क्या होगा।
क्या तुम्हें संख्याओं के इस क्रम में कोई खास बात नज़र आ रही है?
चलो, इन्हें थोड़ा ध्यान-से देखते हैं।

1 1 2 3 5 8 13 ?
1+1 1+2 2+3 3+5 5+8 8+13

क्या अब तुम बता सकते हो कि इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

1 1 2 3 5 8 13 ?

तुमने ठीक सोचा है। इस क्रम की अगली संख्या होगी



21
क्योंकि $8 + 13 = 21$.
और इसके बाद की संख्या होगी
34
 $13 + 21 = 34$.



यह क्रम बहुत ही खास है।
इस लेख को आगे पढ़ने पर तुम जानोगे कि ऐसा क्यों है।



तो तुम्हारी इतनी नानियाँ हैं।

इन संख्याओं को **फिबोनाची संख्याएँ** (Fibonacci numbers) कहते हैं।

यह पहली बार फिबोनाची की एक किताब में दिखाई दी थी। फिबोनाची 1170 से 1240-50 की अवधि के एक इतालवी गणितज्ञ थे। उन्हें लियोनार्डो बोनाकी के नाम से भी जाना जाता है।

इन्होंने फिबोनाची संख्याओं के बारे में फिबोनाची से भी पहले बताया था।



लेकिन फिबोनाची से बहुत पहले पिंगला (450 ईसा पूर्व से 200 ईसा पूर्व) नामक एक भारतीय गणितज्ञ ने इन संख्याओं के बारे में लिखा था। पिंगला ने इन संख्याओं की खोज का श्रेय विरहंका (4 सदी ईसा पूर्व) नाम के एक गणितज्ञ को दिया।

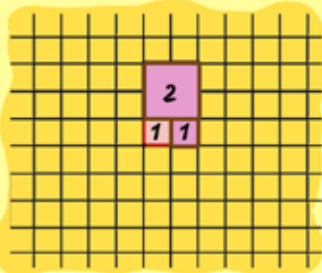
कई लोगों को यह संख्याएँ बहुत ही आकर्षक लगती हैं। कुछ उदाहरणों के ज़रिए देखते हैं कि ऐसा क्यों है।



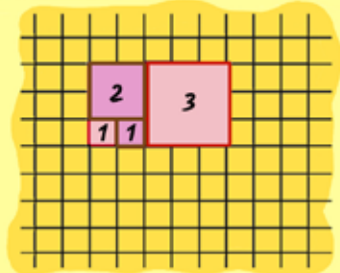
अपने आसपास के कई फूलों को देखो जैसे कि बोगनवेलिया, गुड़हल, सदाबहार, कॉसमॉस आदि। इन फूलों की पंखुड़ियों की संख्या पता करने की कोशिश करो। क्या तुम्हें इनमें फिबोनाची संख्याएँ देखने को मिलीं?

तुमने जिन फूलों को देखा उनमें कितनी पंखुड़ियाँ थीं, **हमें लिखना।**

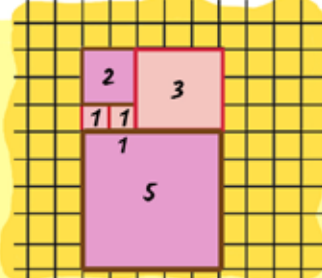
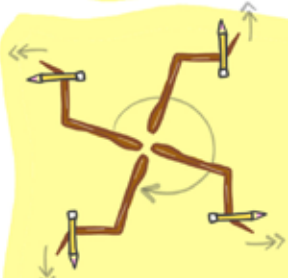




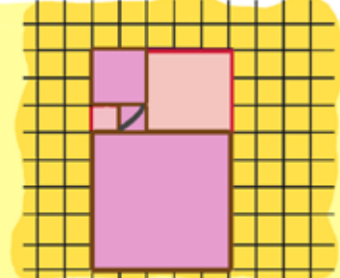
अब इन दोनों वर्गों के ऊपर 2×2 का एक वर्ग इस तरह बनाओ कि इसकी एक भुजा दोनों छोटे वर्गों के साथ उभयनिष्ठ (common) हो।



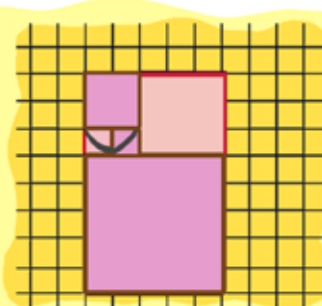
अब इन तीनों वर्गों के दाईं ओर 3×3 का एक वर्ग इस तरह बनाओ कि इसकी एक भुजा तीनों वर्गों के साथ उभयनिष्ठ हो।



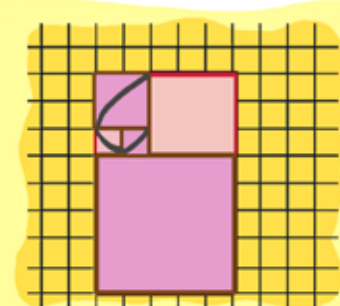
अब इन चारों वर्गों के नीचे 5×5 का एक वर्ग ऊपर बताए तरीके से बनाओ और इस प्रक्रिया को तब तक जारी रखो जब तक कि तुम्हारे कागज़ में जगह हो। ध्यान रखना कि तुम्हें संख्याओं 1, 1, 2, 3, 5, 8, 13... का पालन इस क्रम में करना है बाएँ, ऊपर, दाएँ, नीचे।



अब हम कुछ चौथाई वृत्त (quarter circles) बनाते हैं। पहले वर्ग में ऊपर दिखाए गए तरीके से चौथाई वृत्त बनाओ।



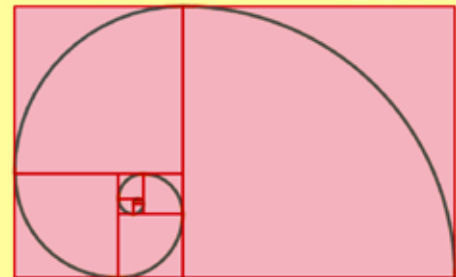
अब अगले वर्ग में चौथाई वृत्त बनाओ।



अब तीसरे वर्ग में बनाओ और इसी तरह आगे भी बनाते जाओ।



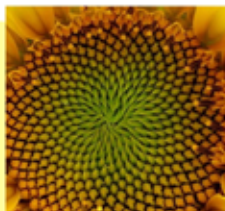
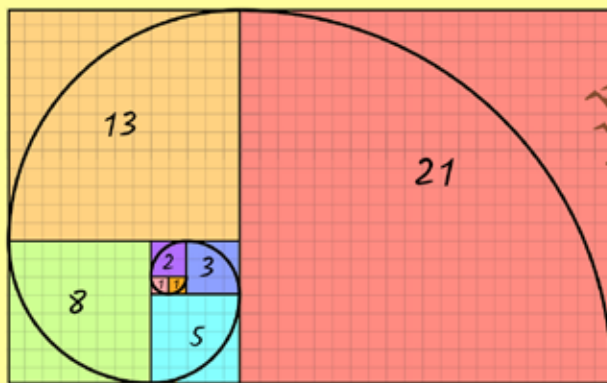
ध्यान रखना कि चौथाई वृत्त उसी क्रम में बनाना है जिस क्रम में तुमने वर्ग बनाए थे, यानी कि बाएँ, ऊपर, दाएँ, नीचे। इससे तुम्हें एक सतत वक्र (continuous curve) मिलेगा।



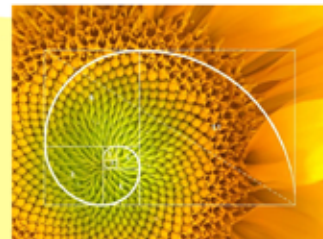
यदि तुम इन चौथाई वृत्तों को बनाना जारी रखो तो तुम्हें ऊपर बनाई गई जैसी एक आकृति मिलेगी।

तुम इसमें रंग भी भर सकते हो। इससे तुम्हें इस तरह का एक रंगीन सर्पिल (spiral) मिलेगा। इस सर्पिल को अक्सर **फिबोनाची सर्पिल (Fibonacci spiral)** कहा जाता है।

इस सर्पिल में ऐसी क्या खास बात है? चलो, कुछ तस्वीरों के जरिए इसके महत्व को समझने की कोशिश करते हैं।



क्या तुमने कभी सूरजमुखी का फूल देखा है? सूरजमुखी के फूल पीले रंग के होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये हमेशा सूरज की ओर मुख किए रहते हैं। इसीलिए इनका नाम सूरजमुखी है।



ऊपर सूरजमुखी की नज़दीक से खींची गई एक फोटो दी गई है। इसमें ध्यान-से देखो कि फूलों के अन्दर बीज कहाँ हैं। क्या तुम्हें इसमें वैसा ही सर्पिल दिख रहा है जैसा हमने ग्राफ पेपर पर बनाया था?

तुमने सुना?

गणितीय जैववैज्ञानिकों को सूरजमुखी के फूल बहुत प्रिय हैं। क्योंकि यह जीवन के पैटर्न को निर्धारित करने वाले अदृश्य गणितीय नियम 'फिबोनाची संख्या' के सबसे स्पष्ट प्रदर्शनों में से एक हैं। हम पहले ही देख चुके हैं कि कुछ फूल फिबोनाची संख्याओं को दर्शाते हैं। कई और पेड़ों के अन्य भाग भी फिबोनाची संख्याएँ दर्शाते हैं।

पर समस्या यह है कि पेड़ हमेशा एकदम ठीक-ठीक फिबोनाची संख्याएँ नहीं दर्शाते। वास्तविक जीवन इतना सरल नहीं है और वास्तविक सूरजमुखियों के बारे में हमारे पास बहुत कम डेटा है। इसलिए इंग्लैंड के साइंस एंड इंस्ट्रुमेंट्स म्यूज़ियम ने लोगों से कहा कि वे सूरजमुखी उगाएँ और उनमें फिबोनाची संख्याओं की मौजूदगी जाँचें। लोगों ने ऐसा किया और तस्वीरें भेजीं। पाया गया कि 657 फूलों में से कई सारे फूलों में फिबोनाची संख्याएँ दिखीं। लेकिन कुछेक में नहीं भी दिखीं।

क्यों ना तुम भी अपने दोस्तों के साथ मिलकर प्रकृति में पाए जाने वाले विभिन्न पैटर्न खोजो। तुमने क्या खोजा, हमें जरूर लिखना।

आगे बढ़ने से पहले मैं तुमसे **एक पहेली** पूछना चाहती हूँ। इसके बारे में हम अगले अंक में बात करेंगे।

सीढ़ियाँ चढ़ते समय या तो मैं एक बार में एक सीढ़ी चढ़ती हूँ या एक बार में दो सीढ़ियाँ लाँघती हूँ। यदि मैं इन दोनों क्रियाओं को मिला दूँ तो 10 सीढ़ियाँ चढ़ने के कितने तरीके हो सकते हैं?



जैसे कि, 3 सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए

- 1-1 सीढ़ी करके 3 बार में चढ़ सकती हूँ, या
2. पहले मैं 2 सीढ़ियाँ लाँघूँ और फिर 1 सीढ़ी चढ़ूँ, या फिर
3. पहले मैं 1 सीढ़ी चढ़ूँ और फिर 2 सीढ़ियाँ लाँघूँ। तो, 3 सीढ़ियाँ चढ़ने के 3 तरीके हो सकते हैं। 4 या 5 सीढ़ियाँ चढ़ने के कितने तरीके होंगे?



ऊपर से नीचे

बाएँ से दाएँ

सुडोकू 64

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको पेज 42 पर मिल जाएगा।

9		6		5	8	1		
	3				4	5		8
	8				7	6	4	
	6	7			9	3	2	1
	2	9	7	1	6		5	
	5	4	8					9
6			3	7		4	1	5
4		5	6		1	2		



कला के आयाम

एक वाकिया और एक प्रदर्शनी

शेफाली जैन

सावित्रीबाई फुले के बारे में एक वाकिया है। पर पहले मैं उनके बारे में कुछ बताना चाहती हूँ। सावित्रीबाई फुले ने ज्योतिबा फुले व फातिमा शेख के साथ मिलकर 1848 में हमारे देश में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला था। यह स्कूल पुणे में फातिमा शेख के घर में खोला गया था। इस स्कूल का खुलना दलित तबके से आने वाले लड़कियों के लिए बहुत अहम बात थी। दलित यानी वे सारे लोग जिन्हें एक अरसे से समाज में जाति व्यवस्था के तहत शोषित किया गया है और निचला ठहराया गया है। और महिलाएँ इस दमन का एक बड़ा शिकार रही हैं, खासकर निचली ठहराई गई जातियों की महिलाएँ।

तो सावित्रीबाई फुले ने जब अपने स्कूल में लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया तब समाज के ब्राह्मण लोग उनसे बहुत खीज गए। वे नहीं चाहते थे कि औरतों को, वह भी दलित औरतों को पढ़ने या पढ़ाने का मौका मिले। ब्राह्मणों ने हज़ारों सालों से शिक्षा का हक केवल अपने पास रखा था। उसके बल पर ही वे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक ताकत पर अपनी हुकूमत बनाए हुए थे। ऐसे में सावित्रीबाई का स्कूल उनके लिए एक बड़ा खतरा बन गया था।

तो वाकिया यह है कि जब भी सावित्रीबाई अपने घर से स्कूल पढ़ाने के लिए निकलतीं, तो रास्ते में उच्च जाति के लोग उन पर मिट्टी, गोबर, पत्थर फेंकते। यह लगभग रोज़ ही होता। पर सावित्रीबाई पीछे हटने वालों में से नहीं थीं। उन्होंने इस अत्याचार से जूझने का एक समाधान निकाला। वे स्कूल जाते वक्त रोज़ एक साफ साड़ी अपने बस्ते

में ले जातीं। रास्ते में पहनी हुई साड़ी तो फेंकें गए कीचड़ और गोबर से मैली हो जाती। पर स्कूल पहुँचकर वे तुरन्त बस्ते वाली साफ साड़ी पहन लेतीं।

मिट्टी, गोबर फिर बोल रहे हैं...

अभी कुछ समय पहले एक प्रदर्शनी में मेरी मुलाकात कलाकार आशीष पलई से हुई। प्रदर्शनी में आशीष की कलाकृतियाँ देखकर मुझे सावित्रीबाई की यह कहानी याद आ गई। आशीष के ज्यादातर आर्टवर्क मिट्टी, गोबर, बाँस आदि से बनाए गए हैं। वही चीज़ें जिन्हें ब्राह्मणों ने एक शिक्षित दलित स्त्री पर बरसाया था, उसे डराने, धमकाने और शर्मिन्दा करने के लिए। उसे औरतों को पढ़ाने से रोकने के लिए। सदियों से हमारी जाति व्यवस्था ने मिट्टी में मेहनत-मज़दूरी करने का काम, गन्दगी उठाने का काम और हाथों से किए जाने वाले काम दलितों पर छोड़ दिए हैं। मिट्टी को गन्दा और दूषित बताकर उससे जुड़े कामों को नीच बताया है। और इन कामों से जुड़े लोगों को भी नीच ठहराया है। पूजा-पाठ और शिक्षा को दलितों से दूर रखा। यह गैर-बराबर और रूढ़िवादी सोच आज भी कायम है।

सावित्रीबाई ने शिक्षा का हकदार बनकर इस जाति व्यवस्था को नकारा। आशीष भी इस जाति व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं, लेकिन कुछ अलग तरह से। आशीष कहते हैं कि वे अपने आर्टवर्क मिट्टी, भूस, गोबर वगैरह से इसलिए बनाते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि मिट्टी और सफाई से जुड़े काम और औज़ारों को, जिन्हें सदियों से गन्दा या नीच माना गया और दलितों पर थोपा गया, कला

के माध्यम से अहमियत मिले। वे ना केवल इन वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं, बल्कि अपने हाथों की मजदूरी और दिमागी रचनात्मकता से उन्हें कला का रूप और दर्जा देते हैं। एक तरह से वे सावित्रीबाई पर फेंकी गई मिट्टी और गोबर को माध्यम बनाकर जाति व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं।

कला में माध्यम और जगह (site) की भूमिका

चित्र 1 में दिख रहे आर्टवर्क का शीर्षक है 'रेसिड्यू ऑफ सोशियल जस्टिस: व्हेर इज़ अवर लिबर्टी, इक्वालिटी एंड फ्रटर्निटी?' (सामाजिक न्याय के अवशेष: कहाँ हैं हमारी स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व?)। कला की कहानी केवल उसकी इमेज/झलक में नहीं किन्तु उसे बनाने में इस्तेमाल की गई सामग्री से भी व्यक्त हो सकती है। आशीष ने

इसे बनाने में मिट्टी, गोबर और चारकोल (जो कोयले से बनता है) का इस्तेमाल किया है। अब देखें ये सामग्री हमें क्या कहानी सुनाती है।

है तो यह एक छोटे-से गाँव की झलक। यहाँ पर हमें दिख रही हैं झोपड़ियाँ, कुछ खाटें, गाँव के कुछ जानवर और पक्षी जैसे बिल्ली, गाय, मुर्गी। धान, गेहूँ या किसी और फसल का ढेर, उसके पास कुछ औज़ार। बीच में शायद गाँव के कुछ लोक देवताओं की मूर्तियाँ हैं और दूर बाबासाहेब आंबेडकर की एक मूर्ती भी है। शायद पेंटिंग में इस्तेमाल की हुई सामग्री हमसे पूछ रही है कि कब तक हम मिट्टी की अहमियत और उससे जुड़े लोगों की मेहनत को ठुकराते रहेंगे। पेंटिंग का शीर्षक भी यही सवाल कर रहा है। कहाँ है वे

चित्र 1. आशीष कुमार पलई, शीर्षक: 'रेसिड्यू ऑफ सोशियल जस्टिस: व्हेर इज़ अवर लिबर्टी, इक्वालिटी एंड फ्रटर्निटी?'
माध्यम: कागज पर मिट्टी, गोबर और चारकोल, साइज: 120x180 सेंटीमीटर, साल: 2019, फोटो: आशीष पलई



उसूल जो बाबासाहेब ने हमें संविधान के तहत दिए थे – स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व? कब तक यह ऊँच-नीच चलती रहेगी? वे दो आँखें, जो गाँव के उस पार से अन्दर झाँक रही हैं, कहीं हमारी आँखें ही तो नहीं? क्या हम इस सवाल को देखकर भी अनदेखा कर देंगे?

चित्र 2 में जो आर्टवर्क है उसका शीर्षक है 'ओप्रेससड लाइव्स मैटर' (शोषित लोगों की ज़िन्दगी भी महत्वपूर्ण हैं)। यह काम आशीष ने अपने खेत में बनाया। सर्दी के मौसम में जब उनके खेत में फसल नहीं लगती, तब उन्होंने वहाँ अपनी कला प्रदर्शनी की। यह प्रदर्शनी भी पूरी तरह से मिट्टी, भूसे, गोबर आदि से बनी है। इन चीज़ों से खेत में आशीष ने ओड़िया भाषा की वर्णमाला के अक्षर बनाए हैं। ये काफी बड़े और

3-डी में हैं। कुछ-कुछ गाँव के घरों जैसे लगते हैं, बस बिना छत के। इन पर कुछ प्रतिमाएँ हैं – जैसे आंबेडकर की प्रतिमा, एक जानवर की प्रतिमा, एक आदमी की प्रतिमा (ये आदमी कुछ वाद्य बजा रहा है) और कुछ औजारों की प्रतिमाएँ। खेत के बीच एक औरत की भूसे और मिट्टी से तैयार की गई प्रतिमा है (चित्र 3)। औरत के हाथ में एक नीला झण्डा है, शायद आंबेडकर से जुड़ी विचारधारा और दलित चेतना का प्रतीक। एक और औरत की प्रतिमा है, जो ज़मीन पर गिरी है। वह शायद घायल है। उस पर हिंसा के निशान हैं। खेत के बीच एक सूअर की और एक बकरे के सर की 2-डी प्रतिमा भी है।

आशीष शायद कहना चाहते हैं कि शोषण शरीर के अलावा भाषा के स्तर पर भी होता है। वर्णमाला

चित्र 2. आशीष कुमार पलई, शीर्षक: 'ओप्रेससड लाइव्स मैटर'
फोटो: आशीष पलई





चित्र 3. भूसे और मिट्टी से बनी एक औरत की प्रतिमा, फोटो: आशीष पलई

(जो भाषा की नींव है) हमें दुनिया का वर्णन करने में मदद करती है, दुनिया रचती है। यह वर्णन किसे नीचे ठहराता है यह उनके हाथ में हैं जिनके पास वर्णमाला पर यानी शिक्षा पर अधिकार है। जैसा मैंने पहले भी बताया, सदियों से ब्राह्मणों ने शिक्षा खुद के पास ही रखी। पर अब स्थिति बदल रही है और इसे बदलने में सक्रिय हैं बहुत-से दलित लेखक, चिन्तक और कलाकार। आशीष के आर्टवर्क में नीला झण्डा लहराती वह औरत (ठीक सावित्रीबाई की तरह ही) वर्णमाला की नई मालकिन और रचेता होने का हक रखती है। इससे वह दुनिया का एक नया वर्णन देगी, नया इतिहास लिखेगी जिसमें ऊँच-नीच नहीं होगी!

आशीष ने बताया कि उनकी एम. ए. की पढ़ाई दिल्ली से हुई। पर उनकी इच्छा थी कि वे अपनी कला के माध्यम से जो व्यक्त करना चाहते हैं उसे अपने गाँव के रहवासियों के साथ भी साझा करें, ना कि सिर्फ शहरी लोगों के साथ। चित्र 2 के आर्टवर्क

को आशीष ने अपने गाँव आरोल में बनाकर यह प्रयोग किया कि क्या इमेज और माध्यम के अलावा कला प्रदर्शित करने की जगह भी कला के मायने बदल सकती है? ऐसी कला जो किसी जगह से गहरा ताल्लुक रखती है और इसलिए खास तौर से उस जगह पर बनाई जाती है, उसे 'साइट-स्पेसिफिक कला' कहा जाता है। साइट यानी जगह और स्पेसिफिक यानी विशेष। ऐसी कला को किसी और जगह पर प्रदर्शित करना मुश्किल है क्योंकि फिर उसका अपनी जगह के विशिष्ट पहलुओं, जैसे बोली, संस्कृति, समुदाय, ज़मीन और समाज से ताल्लुक ढीला पड़ सकता है।

शहर हो या गाँव जाति व्यवस्था पर बातचीत छेड़ना, सवाल उठाना कोई आसान काम नहीं है। सावित्रीबाई की कहानी तो मैंने तुम्हें बताई ही है। आशीष में भी सावित्रीबाई-सा जज़्बा है। इसलिए तो वे भी पीछे नहीं हटते और लगातार अपनी कला के माध्यम से बातचीत के मौके ईजाद करते रहते हैं।

आशीष की कहानी

आशीष उड़ीसा के एक छोटे-से गाँव आरोल से आते हैं। मैं जानना चाहती थी कि उनकी कला में ये सब विचार कैसे आए और उनके छोटे-से गाँव में उन्हें कला की शिक्षा के बारे में कैसे पता चला। आशीष बचपन से गणेश पूजा आदि त्योहारों पर मूर्तियाँ और झाँकियाँ बनाते थे। उनके गाँव के पास एक जानी-मानी जगह है जिसका नाम है रघुराजपुर। रघुराजपुर पट चित्रकला (एक तरह की लोक कला) के लिए मशहूर है। वहाँ की पत्थर की मूर्तियाँ और ताड़ पत्र पेंटिंग भी बहुत प्रचलित हैं। लोग दूर देशों से वहाँ इनकी खरीदारी के लिए आते हैं। आशीष के गाँव से काफी बच्चे दसवीं पास करके वहाँ काम की तलाश में जाते हैं और ये कलाएँ भी सीख लेते हैं। इस तरह आशीष का रुझान कला की तरफ हुआ।

एक दोस्त ने उनके भाई को कला में उच्च-शिक्षा के बारे में बताया। तब भाई ने आशीष की कला में दिलचस्पी को देखते हुए उन्हें 'बैचलर ऑफ विजुअल आर्ट' करने गर्वन्मेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट, खल्लीकोट भेजा। वहाँ पढ़ते वक्त एक स्टडी टूर के दौरान उन्होंने दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट देखा। बैचलर डिग्री हासिल करने के बाद वे एक सीनियर आर्टिस्ट टूटू पटनायक की मदद से दिल्ली आए और थोड़े समय बाद दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट में भर्ती हुए।

आशीष ने बताया कि जब वे खल्लीकोट में थे तब उनकी नरेश से दोस्ती हुई। नरेश और उन्होंने साथ मिलकर उड़ीसा के कई दलित लेखकों को पढ़ा, जैसे अखिला नायक, हेमन्त दलपति और सुब्रत बारीक। इन लेखकों के काम पढ़कर उनके मन में चलते विचारों को प्रेरणा मिली और उनकी कला को एक दिशा। उन्होंने तब तय किया कि वे अपने आसपास वर्णव्यवस्था के नाम पर किए गए उत्पीड़न पर कला के माध्यम से टिप्पणी करेंगे।

आशीष की इस कहानी से ज़ाहिर है कि जैसे कला में विभिन्नता होती है, ठीक उसी तरह कला के सफर की शुरुआत की बहुत सारी अलग-अलग कहानियाँ हो सकती हैं। ये कहानियाँ हमारी कला को एक अलग ही पहचान और दिशा देती हैं। इन कहानियों में कई किस्म के किरदार हो सकते हैं। जैसे आशीष के कलाकार बनने में गणेश महोत्सव, रघुराजपुर के पट चित्रकार, आशीष का भाई, उसका दोस्त, कॉलेज का स्टडी टूर, दूसरे कलाकार जैसे टूटू पटनायक, साहित्यकार जैसे अखिला नायक इन सबका हाथ है।

इस बार मैंने तुम्हें सिर्फ कला में दर्शाई कहानियाँ ही नहीं, बल्कि कलाकार बनने के पीछे की कहानियाँ भी सुनाई। शायद तुम भी किसी दिन कलाकार बनने की अपनी अनोखी कहानी रचोगे! कौन हैं वे किरदार और क्या हैं वे परिस्थितियाँ जो तुम्हें कला की ओर खींच रही हैं?

मैं आशीष का शुक्रिया अदा करना चाहूँगी, अपना समय और अपने विचार मेरे साथ साझा करने के लिए।



भूलसुधार:

मार्च माह में,

- पृष्ठ 4 पर दी गई कहानी 'मैं आपको क्या बुलाऊँ' के लेखक रिनचिन व कंचन हैं।
- 'ध्रुव तारा' लेख में पृष्ठ 12 पर दिए गए चित्र में उत्तरी ध्रुव का लेबल हमने गलत जगह पर लगा दिया था। चित्र की सही लेबलिंग इस प्रकार होगी:
- पृष्ठ 17, 'गणित है मजेदार' में दिया गया था कि ल्यू हुई ने पाइथागोरस के पहले पाइथागोरस नियम के बारे में बताया था। पर असल में ल्यू हुई ने पाइथागोरस के बाद इस पर काम किया था।



रेत-कलर का लिबास ओढ़े
छिपे हुए हैं, यहीं कहीं हैं
चलेंगे जिस दम दिखाई देंगे
अभी यहाँ हैं, अभी नहीं हैं

इतने सारे कदम है इनके
कदम के लेकिन निशां नहीं हैं
चलो किनारे सँभल-सँभलकर
ये रेत-कीड़ों के घर यहीं हैं

रेत के कीड़े

विमल चित्रा

चित्र: मयूख घोष

अमन की कुछ बातें

"तुमने ऐसा किया" कहना और "मुझे बुरा लगा" कहना

अमन मदान

चित्र: कनक शशि

किसी मतभेद के दौरान जब हम ऐसे बात करते हैं कि दूसरे पर जैसे आरोप लगा रहे हैं तो दूसरा पक्ष अपने बचाव पर ज़ोर देना शुरू कर देता है। इसकी जगह अगर हम अपनी भावनाओं की बात करते हैं या हमें जो चोट पहुँची है उसकी बात करते हैं तो लोग ज़्यादा ध्यान-से सुनते हैं। वे हमारी बात को ज़्यादा अच्छे-से समझते हैं।

गुरिन्दर को आलू के पराठे बहुत पसन्द थे। आज फिर उसकी माँ ने पराठे बनाए थे। वह बड़े मज़े-से उन्हें मक्खन के साथ खा रहा था। गुरिन्दर को खाते हुए देख उसकी माँ बड़ी खुश होती थीं। वे रसोई से आई और “एक और ले ले।” कहकर उन्होंने गुरिन्दर की थाली में एक पराठा और डाल दिया। गुरिन्दर ने धीरे-से मना किया। पर फिर खा लिया। भला आलू के पराठे कोई छोड़ता है क्या।

स्कूल में गुरिन्दर के दो जिगरी दोस्त थे – सुरिन्दर और श्याम। हर चीज़ वे साथ-साथ करते थे। आज वे क्रिकेट खेल रहे थे। तीनों एक ही टीम में थे। दूसरी टीम के बैट्समैन ने ज़ोर-से शॉट

तुम मेरे बारे में बिलकुल सोचती नहीं हो। तुम्हें मेरी कोई चिन्ता नहीं है! मैं मोटा होता जा रहा हूँ और तुम पराठे पर पराठे ढूँसती जा रही हो!



लगाया। बॉल गुरिन्दर के सामने से गुज़रती हुई बाउंड्री की तरफ जा रही थी। “भाग गुरिन्दर भाग!” श्याम और सुरिन्दर चिल्लाए। गुरिन्दर धीरे-धीरे भागता था। वह बॉल को पकड़ नहीं पाया और गेंद बाउंड्री पार कर गई। वहाँ बैठे दूसरी टीम के कुछ समर्थक हँसने लगे और “मोटू-मोटू!” चिल्लाने लगे। गुरिन्दर ने घूमकर देखा तो सुरिन्दर और श्याम भी हँस रहे थे। उसे बहुत बुरा लगा। गेम के बाद गुरिन्दर ने उनसे कोई बात नहीं की और सीधे घर आ गया।

अगली सुबह माँ ने देखा कि गुरिन्दर चुप-चुप है। गुरिन्दर को खाते हुए देख उन्हें बहुत तसल्ली

होती थी। मुस्कराकर उन्होंने पूछा, “आज गोभी के परांठे बनाऊँ?” “तुम मेरे बारे में बिलकुल सोचती नहीं हो। तुम्हें मेरी कोई चिन्ता नहीं है! मैं मोटा होता जा रहा हूँ और तुम परांठे पर परांठे टूँसती जा रही हो!” गुरिन्दर बरस पड़ा। “मुझे कुछ नहीं खाना है!”

माँ को उसकी बात चुभी। वह चुप हो गई और दूसरे कमरे में चली गई। थोड़ी देर बाद वह आई और धीमी आवाज़ में बोली, “तुम्हारे शब्दों से मुझे बहुत दुख हुआ। तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?” माँ की बात सुनकर गुरिन्दर के गुस्से पर जैसे ठण्डा पानी पड़ गया हो। उसने सोचा, “माँ मुझे पलटकर डाँट नहीं रही हैं। उन्हें मेरी बात से दुख हुआ यही बता रही हैं।” अगर माँ ने डाँटा होता तो गुरिन्दर भी उन्हें खटाक से कुछ कहता। मगर अब वह क्या बोले। फिर उसने कल की सारी कहानी सुना दी कि कैसे वह भाग नहीं पाया था। और कैसे सब

लोग उसे चिढ़ा रहे थे। उसके साथ जो हुआ, वह सुनकर माँ को भी बहुत बुरा लगा। दोनों ने तय किया अब से गुरिन्दर सुबह फल खाकर स्कूल जाया करेगा। लग तो नहीं रहा था कि वह मोटा है, मगर पौष्टिक खाना खाना तो अच्छी ही बात है। माँ फल काटने में लग गई।

स्कूल में गुरिन्दर को सुरिन्दर और श्याम मिले। एक बार तो गुरिन्दर का मन किया कि उन्हें खूब डाँट लगाए, “कल तुमने दूसरी टीम के बच्चों के साथ मिलकर मेरा मज़ाक क्यों उड़ाया!” मगर फिर उसे माँ का बात करने का तरीका याद आया। उसने अपने आप से पूछा कि उसका उद्देश्य दोस्तों को डाँट लगाना है या उनके व्यवहार को बदलना। अगर वह उन पर चिल्लाता तो वे सिर्फ अपने बचाव में लग जाते या फिर बात को टालने की कोशिश करते। उनको बदला कैसे जाए?

गुरिन्दर ने कहा, “मुझे बहुत बुरा लगा जब कल लोग मुझ पर हँस रहे थे। ऐसा लगा कि जैसे मेरे अपने भी मेरे खिलाफ हो गए हैं।” सुरिन्दर और श्याम चलते-चलते रुक गए। गुस्सेल गुरिन्दर को तो वे जानते थे। उन्हें मालूम था कि उसकी मज़ाकिया बातों को मज़ाक में कैसे टालना है। मगर इस गम्भीर गुरिन्दर को वे क्या जवाब दें जो उन पर गुस्सा न करके, सिर्फ अपना दुख बता रहा था। “क्यों? कल क्या हुआ था?” हिचकिचाते हुए वे बोले। गुरिन्दर ने फिर कल की बात बताई और यह भी बताया कि उसे कितना बुरा लगा था। “क्या हमारी दोस्ती सिर्फ मोटे और पतले होने पर टिकी हुई है,” उसने पूछा?

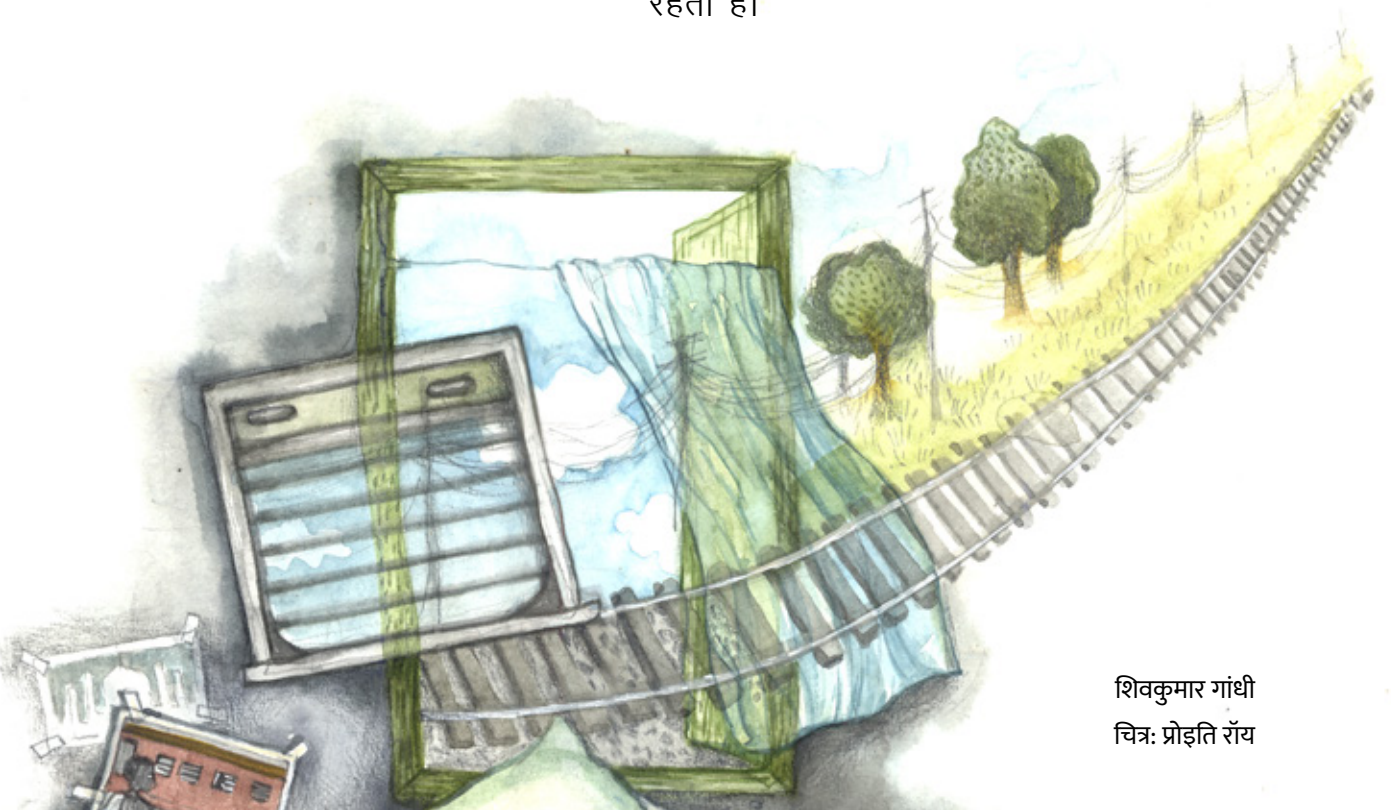
“अरे! नहीं, अपनी तो पक्की दोस्ती है”, दोनों ने जवाब दिया। “खबरदार अगर किसी ने किसी को मोटा या पतला कहकर चिढ़ाया तो!”

और दोनों गुरिन्दर के कंधों पर बाँहें डालकर चलने लगे।



जहाँ मैं सोती हूँ तकिए के थोड़ा ऊपर और पास वाली खिड़की के पास एक रेलगाड़ी चलती रहती है, ऐसा मुझे महसूस होता है। और मैं जब सोते हुए उसे देखती हूँ तो ऐसा लगता है जैसे वह मेरी ललाट पर चल रही है। वह एक चित्र है, पिक्चर पोस्टकार्ड जो कि शिबू को उसकी दोस्त गुनी ने दिया था और शिबू ने मुझे। बिलकुल, यह पोस्टकार्ड किसी रेलगाड़ी की तरह एक स्टेशन पर रुकते हुए मेरे पास आया है।

चित्र में एक आदमी कन्धे पर झोला पकड़े रेलगाड़ी के एक डिब्बे की तरफ देख रहा है। उसके पास में डिब्बे की खिड़की है जिसमें एक और आदमी बैठा है जो बाहर की तरफ देख रहा है। कहाँ? यह पता नहीं चलता। यह पता लगाने के लिए चित्र को और ज़्यादा बढ़ाना पड़ेगा शायद। पर उस आदमी को देखकर ऐसा लगता है कि वह काफी डूबा हुआ है। अपने सफर में डूबा हुआ होगा। मुझे हमेशा यह पोस्टकार्ड देखकर ऐसा लगता है कि रेलगाड़ी बस चलने ही वाली है। और मेरे मन में तो वह चलती ही रहती है।



शिवकुमार गांधी
चित्र: प्रोइति रॉय

पिक्चर पोस्टकार्ड
की ज़िन्दगी में
अनेक साथी



कमरे में घूमती है। एक जगह से दूसरी जगह की ओर।

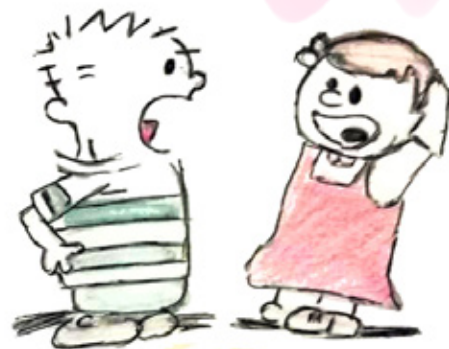
कई बार तो मैं उसे चलाती हूँ। खिड़की के पास से वह चलना शुरू करती है। फिर उसका अगला स्टेशन खिड़की से गुज़रने के बाद आता है। जब रेल खिड़की से गुज़रती है तो रेलगाड़ी की खिड़की पर बैठा आदमी कमरे की खिड़की से बाहर देखता हुआ लगता है। और ऐसे दो-दो खिड़कियाँ हो जाती हैं। और ऐसे दो-दो बार देखना हो जाता है। जो आदमी प्लेटफार्म पर खड़ा है वह भी बिना रेलगाड़ी में बैठे मेरे सफर में बाहर खिड़की से देख लेता है।

खिड़की से गुज़रने के बाद जो स्टेशन आता है वो एक कैलेंडर है। उसे बाबा ने लगा रखा है। उसके पन्ने हर महीने बदलते रहते हैं। अभी इस पन्ने पर मार्च 2019 है। तो रेलगाड़ी अभी मार्च में चली जाती है। या ऐसे है कि मैं उसे मार्च में ले जाती हूँ। रेलगाड़ी मार्च महीने की तारीखों वाले डिब्बों में चलती है।



[illegible]

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी,
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश



मैंने अपने दोस्त आरव के साथ एक दिन लड़ाई की थी। आरव को एक टेबल मिलता है तभी वह मेरे टेबल पर अपना हाथ रखता है। जबकि उसके पास बैठने के लिए अपना टेबल होता है। मैंने उसे प्यार से समझाया और अपना गुस्सा काबू में रखा। पर वह नहीं समझा। फिर एक दिन दीदी ने उसे अलग जगह पर बिठाया। मुझे अच्छा भी लगा और बुरा भी लगा क्योंकि तब तक मैं उसका मित्र बन चुका था।

झगड़ा करने के बाद अफसोस तो हुआ है। और यह भी लगता है कि कोई अलग तरीका अपनाने से मसला सुलझ सकता था। लेकिन उस समय समझ नहीं पाते कि क्या कहें और क्या नहीं। उल्टा-सीधा सब बोलते चले जाते हैं। एक बार हमारी लड़ाई हमारे एक दोस्त से हो गई थी। तो उसने ऊँची आवाज़ में बात कर दी। तो हमने उसको मार दिया। फिर बाद में बहुत अफसोस हुआ कि मारा क्यों।

राजीव, आठवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। मेरा बड़ा भाई हमारे घर छुट्टियाँ मनाने के लिए आया था। एक दिन हम अपनी बिल्डिंग के सामने की जगह पर क्रिकेट खेल रहे थे। वहाँ हमारे ठीक सामने एक फोरव्हीलर खड़ी थी। मेरा भाई बहुत अच्छा क्रिकेट खेलता है। पर वहाँ ज़्यादा जगह न होने के कारण मैंने भैया से कहा, “भैया यहाँ ज़्यादा जगह नहीं है। तुम थोड़ा धीरे-से खेलो।” भैया ने “हाँ” कहा। पर जब वह खेलने लगा तो उसने बहुत बड़ा छक्का लगाया। और बॉल उस फोरव्हीलर का काँच तोड़कर अन्दर चली गई।

हम तो भाग ही पड़े। फोरव्हीलर के मालिक बहुत शोर मचाने लगे। हम सब में बड़ा होने के कारण भैया उनसे झगड़ा करने लगा। बहुत झगड़ा हुआ। उन्होंने हमारी बॉल वापिस नहीं की। हमें बहुत गुस्सा आया। हम घर चले गए। घर जाकर हमने मेरे पिताजी को यह सारी बात बताई। फिर पिताजी उनके पास गए और शान्ति से मामला सुलझाकर हमारी बॉल ले आए। फिर हमें लगा कि हमने झगड़े की बजाय शान्ति से बात की होती तो इतना झगड़ा नहीं होता और जल्दी से हमें बॉल मिल जाती।

मृणाल देवेन्द्र घनवट, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अगर कभी मेरा झगड़ा मेरे दोस्त से होता है और मैं ज़्यादा बोल देता हूँ तो मुझे अफसोस होता है कि मैं इतना क्यों बोला। इसलिए अब मैं अपने गुस्से को कंट्रोल करता हूँ। पर जब कभी मेरा अपने गुस्से पर कंट्रोल नहीं होता तो मैं अपने पास एक स्ट्रेस बॉल रखता हूँ तो मुझे गुस्सा कम आता है।

आदित्य कोहली, तेरह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

एक दिन मैं फोन देख रहा था तभी मेरी मम्मी ने फोन छीन लिया जिसकी वजह से मैं उदास हो गया। फिर मैं नीचे गया तो मेरी बुआजी ने किसी वजह से मुझे गुस्सा दिला दिया। तो मैंने गुस्से में उनको उलटा जवाब दिया जिससे हमारा झगड़ा शुरू हुआ। बाद में जब हमारा झगड़ा बन्द हुआ तो मुझे अफसोस हुआ। मैंने सोचा कि अगर मैं अपना गुस्सा दिखाने की बजाय शान्ति से बैठता तो मेरी बुआ जी को भी गुस्सा नहीं आता और झगड़ा होता ही नहीं।

अभ्युदय चौहान, चौथी, दि हेरिटेज स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

एक दिन मेरे चाचा और मेरे पापा की लड़ाई हो गई। फिर मेरे चाचा और पापा कुछ दिन तक एक-दूसरे से गुस्सा रहे। लेकिन फिर मेरे चाचा को इस बात का अफसोस हुआ कि उन्होंने मेरे पापा से बदतमीजी से बात की और कुछ दिनों बाद साथ रहने से उनका झगड़ा सुलझ गया।

जिया भगोरे, पाँचवीं, सेंट मैरी कान्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

एक बार मेरा झगड़ा मेरी दोस्त से हुआ था। बाद में मुझे अफसोस हुआ कि अगर मैं ही उस स्थान को छोड़कर थोड़ी देर के लिए चली जाती तो मसला वहीं पर शान्त हो जाता। और बात आगे नहीं बढ़ती। और हम दोनों को दीदीजी से डाँट नहीं खानी पड़ती।

प्रभा, नौवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार अपनी बेस्ट फ्रेंड से झगड़ा करने के बाद मुझे ऐसा लगा कि मुझे उसकी बात भी सुननी चाहिए थी। और सिर्फ अपने बारे में नहीं उसके बारे में भी सोचना चाहिए था।

दिव्या, बारह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

जो हुआ :

जी हो सकता था :

नीचा दाखला, पृथक्,
कक्षा-5, शिक्षण विभाग

अप्रैल 2023

1. दो लड़के नदी पार करना चाहते हैं। नदी पार करने का एकमात्र रास्ता नाव है। लेकिन नाव एक बार में केवल व्यक्ति को नदी पार करा सकती है। ज़ाहिर है कि नाव अपने आप तो वापिस आ नहीं सकती और वहाँ कोई रस्सी या कोई भी और ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी मदद से नदी पार की जा सके। फिर भी दोनों लड़कों ने नदी पार कर ली। कैसे?

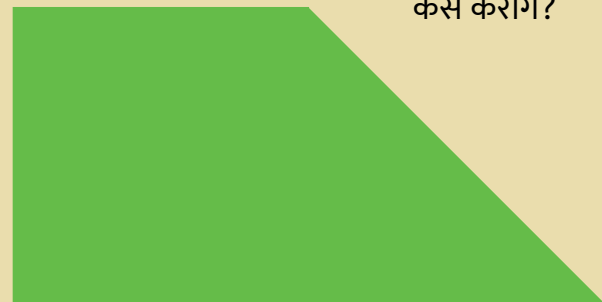


2. दिए गए बॉक्स में प्रश्न चिह्न की जगह पर कौन-सी संख्या आएगी?

81	36	144
??	25	16
64	100	49

3. एक पार्किंग में 3 लाल, 4 सफेद और 5 काली कार खड़ी थीं। उनमें से 8 कारें चली गईं। क्या तुम बता सकते हो कि कौन-से एक रंग की कार पक्के तौर पर वहाँ से गई होगी?

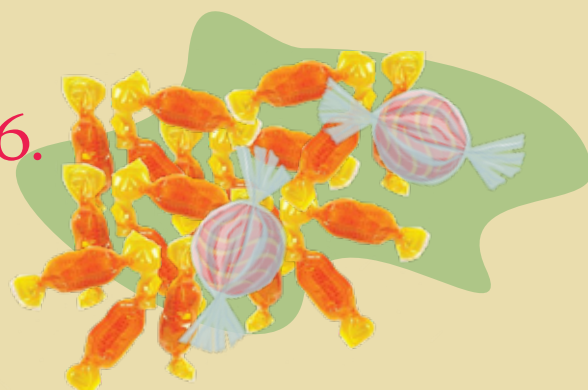
4. दिए गए चित्र को 4 बराबर भागों में बाँटना है। कैसे करोगे?



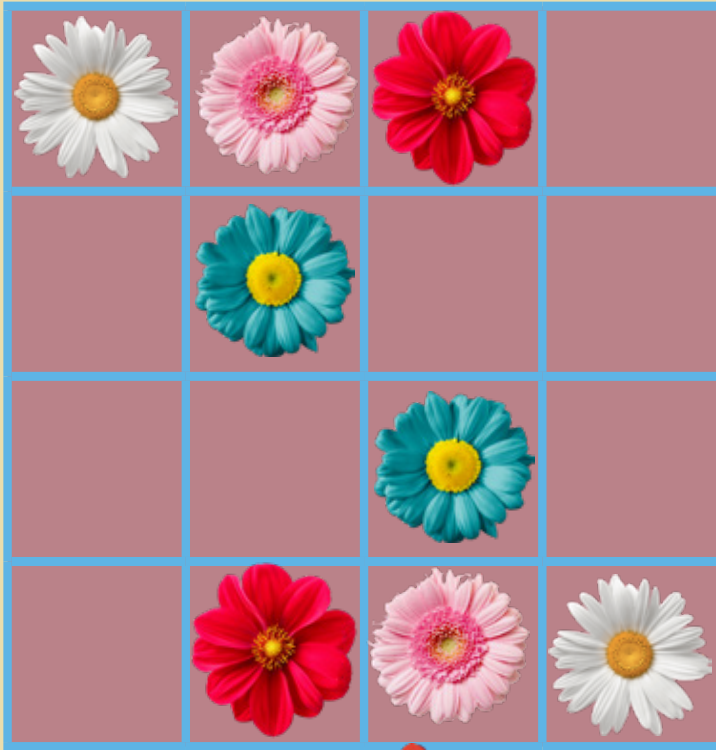
5. दी गई ग्रिड में कुछ देशों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ब्रा	ली	ल	वि	जा	चि	गु	दि	ची
रु	स	क्यू	बा	य	पा	कि	स्ता	न
मे	स्पे	ऊ	भा	र	त	न	इ	यू
स्वी	ड	न	दी	इं	क	ना	डा	क्रे
फ्रां	इ	रा	क	अ	डो	य	म	न
स	ज	र्म	नी	म	र	ने	पा	ल
ई	रा	न	चि	री	फ	ब	शि	प
से	इ	ट	ली	का	म	ले	शि	या
मा	ल	दी	व	न	गो	भू	टा	न

6.



मायरा के पास अपने भाई सैम से तीन गुना ज़्यादा टॉफियाँ हैं। यदि मम्मी मायरा को 20 टॉफियाँ और दे दें तो उसके पास सैम से 7 गुना ज़्यादा टॉफियाँ हो जाएँगी। बताओ कि सैम के पास कितनी टॉफियाँ थीं?



7.

दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग फूल आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से फूल आएंगे?

8.

नीचे दिए वाक्यों में कुछ फूलों के नाम छिपे हुए हैं। जरा ढूँढो तो।

- सुनील कम लड्डू लाया है।
- कल रात रानी दिल्ली जाने वाली है।
- महक ने रसेदार सब्जी बनाई थी।
- बगुला बहुत देर से घात लगाए बैठा था।
- अंजू हीरे की अँगूठी पहनती है।



माथा पच्ची

फटाफट बताओ

क्या है जिसे लोग काटते तो हैं पर उसके टुकड़े किसी को दिखते नहीं?

(झमझ)

कौन-सा बैंक है जहाँ पैसे नहीं मिलते हैं?

(कहाँ डाक)

यदि तुम्हारे मामा की बहन तुम्हारी मौसी नहीं हैं तो फिर कौन हैं?

(आँ)

पानी मेरा पिता
पानी ही मेरा बेटा
ऊपर मुँह करके देखो
पाओगे मुझे लेटा

(लडाक)

लग-लग कहे तो ना लगें,
मत लग कहे लग जाएँ

(छॉछ)

आज अगर मैं ताज़ा हूँ तो
कल हो जाता बासी
दुनिया भर की खबरें देता
तुमको अच्छी-खासी

(गबछाह)



मेरा छोटू

अमन वर्मा
आठवीं, ऑक्सफोर्ड कॉन्वेंट स्कूल
देवास, मध्य प्रदेश

जब मैं सात साल का था तो मैं अपनी छुट्टियों में अपने नाना-नानी के यहाँ गया। वहाँ मेरी छोटी बहन भी थी। हम दोनों बहुत मस्ती करते थे। एक दिन मैं अपने बड़े नानाजी के यहाँ गया। वहाँ मैंने एक खरगोशनी को देखा। मैंने अपने नाना से पूछा कि मैं इसे ले जाऊँ तो मुझे नानाजी ने कहा कि वो कुछ दिन बाद बच्चों को जन्म देने वाली है। तुम उनमें से किसी एक बच्चे को ले जाना। तो मैं खुश हो गया।

कुछ दिनों बाद उसने पाँच सुन्दर बच्चों को जन्म दिया। करीब दस दिन बाद उनकी चमड़ी पर रोएँ जैसे नाजूक और मुलायम बाल आ गए। मेरी छुट्टी खतम होने वाली थी। पापा मुझे लेने

भी आ गए थे। तब मैंने सारी बात पापा को बताई। फिर मैं अपने नानाजी के पास गया और एक प्यारे खरगोश छोटू को ले आया। फिर हम घर आ गए।

छोटू कुछ दिनों तक उदास रहा। फिर वह हमसे घुल-मिल गया। मेरी मम्मी को छोटू पसन्द नहीं था। लेकिन वह धीरे-धीरे उसे पसन्द करने लगीं। वह हमारे परिवार का हिस्सा बन गया। हमारे एक पड़ोसी के पास भी खरगोश था। वो दोनों बहुत मस्ती करते थे।

फिर हमने वहाँ से घर बदला। छोटू बिलकुल अकेला पड़ गया था। वह बीमार हो गया था। हमने उसे उन खरगोशों के पास पहुँचा दिया। मैं उस दिन बहुत रोया। लेकिन छोटू अब इस दुनिया में नहीं रहा। कह रहे हैं कि उसे बिल्ली खा गई।



चित्र: अनुष्का, पहली, अजीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड





मैंने दीवाली ऐसे मनाई

राखी यादव
चौथी, प्राथमिक शाला पथरिया रैख्यतवारी
सागर, मध्य प्रदेश

दीवाली के दिन जब मैं पटाखे फोड़ रही थी तो मुझे एक आवाज़ आई। जब बहुत रात हो गई थी तो लाइट गोल हो गई थी। मैं जब फुलझड़ी जला रही थी तो मैंने देखा कि मेरी बकरी का एक छोटा-सा बच्चा हुआ है। तो मैं बहुत खुश हुई। तभी लाइट आ गई। हम सब ने धूमधाम से दीवाली मनाई। मेरा पूरा परिवार उस दिन बहुत खुश हुआ।



मेरा पन्ना



मैं अपने नौवें जन्मदिन पर दस दिनों के लिए बाली गई थी। मैं और मेरा भाई पहली बार सर्फिंग पर जा रहे थे। बाली बहुत सुन्दर था और उसके पानी में गन्दगी या कूड़े-कचरे का नामोनिशान नहीं था। जब हम सर्फिंग के लिए समुद्री किनारे पर पहुँचे तो सर्फिंग कोच ने हमें अपनी सुरक्षा के लिए सही सामान नहीं दिया जैसे कि लाइफजैकेट, पैर के लिए रस्सी आदि।

मैंने और मेरे परिवार ने बाली की खबरें नहीं देखी थीं। जिस दिन हम सर्फिंग करने जा रहे थे उस दिन बाली की तरफ एक सुनामी आ रही थी। शुक्र है कि वह ज़्यादा खतरनाक नहीं थी, लेकिन पानी में रहना असुरक्षित था, खासकर

सेफ्टी सामान के बिना। सर्फिंग करते समय पानी की लहरें काफी ऊँची उठ रही थीं। मैं पानी में अपने परिवार से बिछड़ गई थी और मेरे पैर में एक नुकीला पत्थर भी घुस गया था तो मैं अच्छे-से तैर भी नहीं पा रही थी।

मैं पानी के भीतर कम से कम तीस मिनट के लिए फँसी हुई थी और मेरे पैर से काफी खून भी निकल रहा था। किसी पेशेवर तैराक ने मुझे बचा लिया। आज जब मैं उस घटना को याद करती हूँ तो मैं सोचती हूँ कि शुक्र है कि वह आदमी वहाँ था। इस अनुभव के बाद से मुझे अब पानी से बहुत डर लगता है।

वह उरावना समन्दर

अराइना सुखीजा
आठवीं, प्रोमेथियस स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश



पेड़ों का दर्द

बसन्ती कुरामी
आठवीं, माध्यमिक शाला, झापरा
सुकमा, छत्तीसगढ़

वो लोग पेड़ काटते हैं
पेड़ को दर्द होता होगा
अगर हम किसी इन्सान को काटे
तो वो बहुत रोता है
पेड़ को हम काटते हैं
तो पता नहीं कर पाते
कि वो रो रहा या चिल्ला रहा है
हम किसी पेड़-पौधे को
न काटें तो अच्छा

पेड़

अनुराधा
तीसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय खेड़ा
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

हरा-भरा है एक पेड़
आँगन में वो खड़ा है
उसकी छाया हमको भाती
नानी माँ की याद दिलाती

चित्र: उमा, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा



मेरा नाम दिया है। मेरी पक्की दोस्त तनुजा है। हम दोनों बचपन से पक्के दोस्त हैं। हम बचपन में कभी उसके घर खेलते कभी मेरे घर। वैसे तो हम ज़्यादा समय मेरे घर खेलते थे। हम कभी दलिया खाते, कभी खिचड़ी। जब गाँव में किसी के घर फल लगते तो हम उनके फल चोरी करने चले जाते हैं।

एक दिन ऐसा हुआ कि वो मेरे घर पर मेरी दीदी और अपनी दीदी के साथ अड़्डू खेल रही थी। गाँव में बकरा कटा था। मैं एक किलो मीट लेकर घर आई। मैंने मीट किचन में रख दिया पर मैंने हाथ नहीं धोए। मैं भी खेलने लग गई। मैं तनु को बगल में खड़ी रही। वहीं मेरा कुत्ता बँधा हुआ था। उसे मीट की खुशबू आई होगी और उसने तनु को काट दिया। उस दिन वह फ्रॉक पहनकर आई थी।

जब उसे कुत्ता काट रहा था तब बाएँ साइड से मेरी दीदी और उसकी दीदी

उसकी फ्रॉक खींच रही थी और दाएँ साइड से कुत्ता उसे काटने के लिए उसकी फ्रॉक खींच रहा था... बेचारी तनु। तभी वह रोने लगी। फिर उसकी दीदी उसे घर ले गई। अगले दिन वह गरमपानी अपनी मम्मी के साथ सुई लगाने गई। उस दिन से वह मेरे घर कम आने लगी।

मैं तनु को कभी-कभी खन्नू बुलाती हूँ क्योंकि वो हर समय खाने की बात करती है। जब हम उसे पेड़ से फल तोड़ने के लिए कहते हैं तो वह मना कर देती है क्योंकि वो पेड़ पर चढ़ने से डरती है। मैं पेड़ पर चढ़ जाती हूँ और जब मैं फल तोड़कर नीचे आती हूँ तो वह अपने लिए बड़े फल ले लेती है और कहती है कि मैं बड़े ही खाऊँगी। इसलिए मुझे लगता है कि मैंने अच्छा किया कि उसका नाम खन्नू रख दिया।

तनुजा मेरी पक्की दोस्त

दिया तहवाल
आठवीं, गर्वमेंट इंटर कॉलेज
धनियाकोट, गरमपानी
नैनीताल, उत्तराखण्ड

चित्र: महक, मुस्कान संस्था,
भोपाल, मध्य प्रदेश



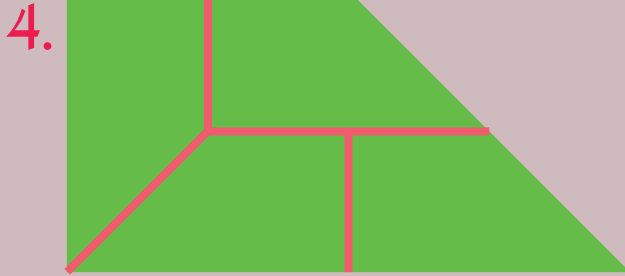


चित्र: अंकुश, तीसरी, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

1. क्योंकि दोनों लड़के नदी के अलग-अलग छोर पर थे।

2. बॉक्स में 4 से लेकर 12 तक की संख्याओं के वर्ग दिए गए हैं। इसलिए प्रश्न चिह्न की जगह 11 का वर्ग यानी 121 आएगा।

3. काले रंग की। क्योंकि यदि लाल व सफेद रंग की सारी कारें पार्किंग से चली जाएँ तो भी उनकी कुल संख्या 7 ही होगी, जबकि पार्किंग से कुल 8 कारें गई थीं।



5.

ब्रा	ली	ल	वि	जा	चि	गु	दि	ची
रु	स	क्यू	बा	य	पा	कि	स्ता	न
मे	स्पे	ऊ	भा	र	त	न	इ	यू
स्वी	ड	न	दी	इं	क	ना	डा	क्रे
फ्रां	इ	रा	क	अ	डो	य	म	न
स	ज	र्म	नी	म	र	ने	पा	ल
ई	रा	न	चि	री	फ	ब	शि	प
से	इ	ट	ली	का	म	ले	शि	या
मा	ल	दी	व	न	गो	भू	टा	न

6. माना कि सैम के पास x टॉफियाँ हैं
मायरा के पास उससे 3 गुनी टॉफियाँ हैं, यानी कि 3x टॉफियाँ हैं।

मम्मी ने मायरा को 20 टॉफियाँ और दीं तो
उसके पास हो गई 3x + 20

$$3x + 20 = 7x$$

$$7x - 3x = 20$$

$$4x = 20$$

$$x = 5$$

सैम के पास 5 टॉफियाँ थीं।

- 8.
- सुनील कम लड्डू लाया है।
 - कल रात रानी दिल्ली जाने वाली है।
 - महक ने रसेदार सब्जी बनाई थी।
 - बगुला बहुत देर से घात लगाए बैठा था।
 - अंजू हीरे की अँगूठी पहनती है।

7.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



1 कं	घू	2 ट	र		3 कु		4 अ	
पा		बाँ			5 क	च	ना	र
सा		6 इ	सित	7 हा	र		ना	
		8 पि	न		बी		9 घों	स
11 ब	ल्ला			बाँ	धा			इ
कला			12 वा	त	13 क			ट
	14 वा	र्ज	र		15 मा	उ	16 स	
17 क	द		18 को	कु	न		19 रो	डी
20 प	र	व	ल				21 ने	द

सुडोकू-64 का जवाब

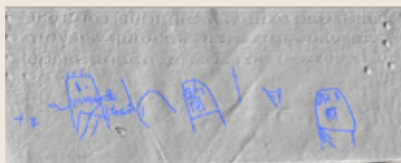
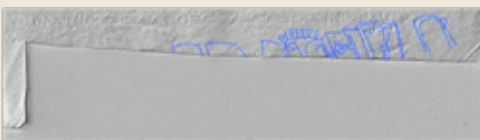
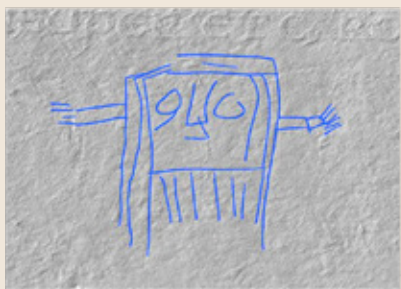
9	4	6	2	5	8	1	3	7
7	3	2	1	6	4	5	9	8
5	8	1	9	3	7	6	4	2
8	6	7	5	4	9	3	2	1
3	2	9	7	1	6	8	5	4
1	5	4	8	2	3	7	6	9
2	1	3	4	8	5	9	7	6
6	9	8	3	7	2	4	1	5
4	7	5	6	9	1	2	8	3

फरवरी में हिन्दी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय नाबोकोव पुरस्कार मिला। विनोद जी देश के प्रसिद्ध कवियों, कहानीकारों व उपन्यासकारों में से एक हैं। कुछ सालों पहले उन्होंने बच्चों के लिए लिखना शुरू किया। 2008 में उनकी एक लम्बी कहानी 'हरे घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़' चकमक में छपी। इसी कहानी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने एक और कहानी 'एक चुप्पी और बहरी जगह' लिखी। यह कहानी कुछ 7-8 साल पहले चकमक में धारावाहिक रूप में छपी। विनोद जी को चकमक टीम और उनके पाठकों की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ!

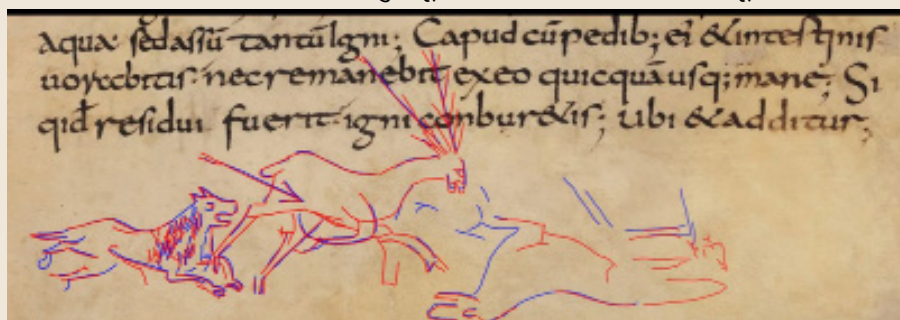
विनोद कुमार
शुक्ल को पैन/
नाबोकोव
पुरस्कार



डूडल मिले कुछ बहुत पुरानी किताब में



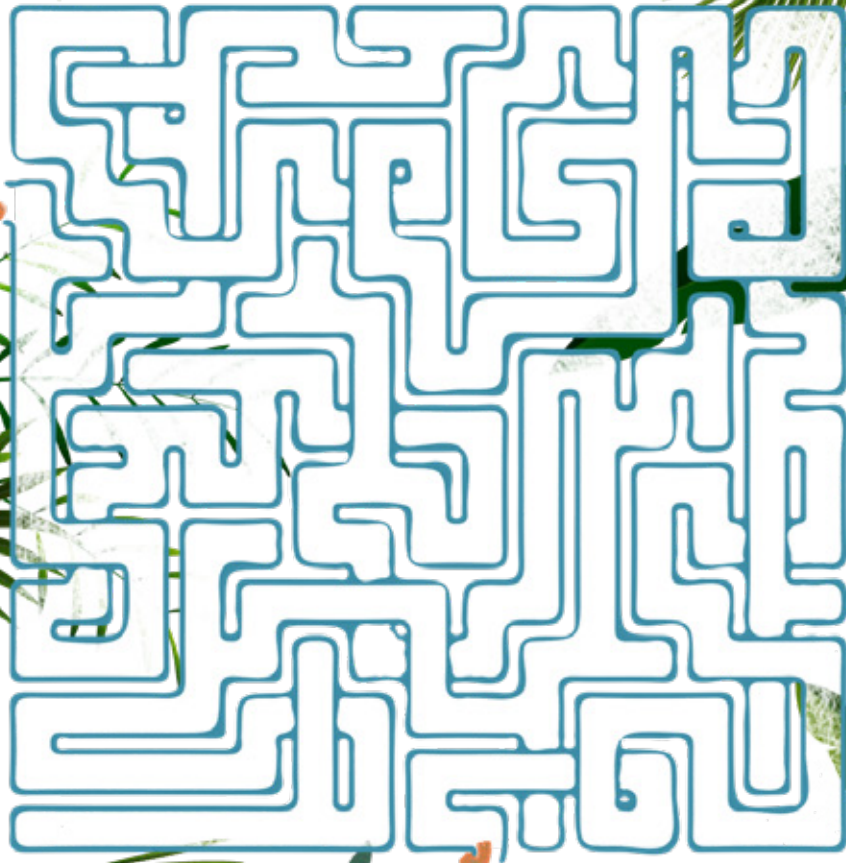
आठवीं सदी की किताब जिसमें नन ने कुछ डूडल बनाए थे (बॉडलियन लाइब्रेरी, यूके)।



नौवीं सदी की एक किताब में उकेरे गए चित्र (बॉडलियन लाइब्रेरी, यूके)।

यूरोप की सबसे पुरानी लाइब्रेरी में से एक है बॉडलियन। उसमें लगभग 1300 साल पुरानी एक किताब है। हाल ही में इस किताब पर फोटो लेने की एक नई तकनीक इस्तेमाल की गई। इस तकनीक से किताब की भौतिक सतह के चित्र लिए जा सकते हैं। यानी कि बहुत ही हल्के से उकेरी/लिखी गई चीजों को भी अब "देखा" जा सकता है जो पहले हमारी नज़रों से छिपी थीं। और इस तरह हमें इस किताब की मालिक — एक नन (भिक्षुणी) — द्वारा लिखी गई कुछ चीजें और बनाए गए कुछ डूडल/चित्र का पता चला है। ऐसे कुछ डूडल अन्य किताबों में भी पाए गए हैं।

मैक



प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी लक्स डोट रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं भार के सिविलप्रिन्ट प्रा लि फ्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755-2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन